26/8/87

संसद में असंसदीय व्यवहार

आलोक मेहता

लिया था।

एक बार मधु लिमये ने कांग्रेसी सदस्यों की ओर इशारा करते हुए कह दिया—'अध्यक्ष जी, माताजी के गुण्डों से कह दीजिए, मैं उनसे डरने वाला नहीं हूं।' बस फिर क्या था—सदन में बड़ी देर तक हंगामा होता रहा।

पिछले तीन दशकों से संसद की कार्रवाई को नजदीक से देखने वाले पत्रकारों और विशेषज्ञों का कहना है कि असंसदीय भाषा के प्रयोग और व्यवहार में समाजवादी नेता सदैव अग्रणी रहे हैं। मधु लिमये के अलावा राजनारायण, किशन पटनायक, कल्पनाथ राय (वर्तमान कांग्रेसी मंत्री) जैसे नेताओं ने लोकसभा और राज्य सभा में कई बार ऐसी बातें कहीं हैं, जिन्हें सदन की कार्रवाई से निकालना पड़ा। राजनारायण तो सदन में धरना देने और सुरक्षा कर्मचारियों द्वारा उठाकर बाहर निकाल दिए जाने के लिए सर्वाधिक चर्चित हुए। कभी-कभी तो वे सदन के बीच में जाकर लेट जाते थे। उनके अधिक बोलने की आदत का आलम यह रहा है कि वे जनता राज के दौरान जब मंत्री बन गए, तब भी आवश्यकता से अधिक बोलते थे और अध्यक्ष उन्हें नियंत्रित करते थे।

संसद में पुरुष और महिला सदस्यों के बीच भी कई बार जमकर नोक-झोंक हुई है और दिलचस्प भी रही है। एक बार महंगाई की समस्या पर बोलते हुए डा. लोहिया ने गृहिणियों को खर्च चलाने में आने वाली दिक्कतों का जिक्र किया, तो उस समय कांग्रेस की तेज तर्रार सदस्य तारकेश्वरी सिन्हा ने आपत्ति की—'अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य गृहिणियों की दिक्कत क्या जानें। उन्होंने तो शादी ही नहीं की है।' डा. लोहिया ने तपाक से चुटकी ली—'आपने हमको मौका ही कब दिया?'

संसद की नोक-झोंक और गर्मागर्मी में अध्यक्ष की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है। इस दृष्टि से सरदार हुकम सिंह के कार्यकाल को बहुत याद किया जाता है। संसद के दिग्गज यह मानते हैं कि श्री हुकम सिंह तनाव की स्थिति को संभालने में माहिर थे। इस संदर्भ में एक घटना दिलचस्प है। एक रेल दुर्घटना को लेकर प्रतिपक्ष के सदस्य बहुत उत्तेजित थे और हर रेलवे क्रासिंग पर कर्मचारी लगाए जाने की मांग कर रहे थे। रेलमंत्री २० हजार रेलवे फाटकों पर कर्मचारी तैनात कर पाने में सरकार की कठिनाई बता रहे थे। मामला तूल पकड़ जाने पर श्री हुकम सिंह ने कहा—देखिए, आप चाहें तो एक रेल क्रासिंग पर मैं स्वयं जाकर खड़ा हो जाता हूं—शायद आपकी समस्या हल हो जाए।' इस एक वाक्य से तनाव कम हुआ और कार्रवाई ठीक ढंग से चलने लगी।

वर्तमान राज्यसभा के सभापति पद से विदाई ले रहे उपराष्ट्रपति श्री हिदायतुल्ला भी हल्की-फुल्की बातों से उत्तेजित सदस्यों को शांत करने में सफल रहे हैं। लेकिन सदस्यों की हरकतों से वे परेशान भी बहुत हुए हैं। एक बार तो उन्होंने सदन में ही कह दिया था—'मैंने जीवन में अपने को कभी इतना विचलित महसूस नहीं किया, जितना कि इस सदन में।' सदस्यों के व्यवहार से तंग आकर एक बार उन्होंने यह कहते हुए सदन त्याग

(शेष पेज चार पर)